Sewan Grassland

An Extraordinary Natural Feed Resource base of Thar Desert

Sewan grass (*Lasiurus scindicus*) is the most important forage resource and plays vital role in hot arid grasslands/rangelands. This grass is reckoned as king grass amongst all desert grasses. In context of Sewan grasslands productivity there is a local proverb in Jaisalmer district:

"Raja re dhan ro, Palli re Sewan ro ki tha koni"

Why it is an extra ordinary pasture grass?

- Having high water and energy use efficiencies irrespective of the low moisture conditions ensuring stabilized herbage production to support livestock production.
- Nutritious with high protein and mineral contents and also palatable at mature stage.
- Sewan grasslands have more life span as compared to other desert grasses.
- Even in one or two monsoon rains, it regenerates well and grows profusely.

Conservation

Sewan grasslands in hot arid region need to be properly managed and utilized for better livelihood of desert inhabitants and improvement of animal husbandry sector. People/community participatory approach should be required for large scale Sewan grassland conservation and development programme.

ENVIS Centre on Combating Desertification
ICAR-Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur - 342003

सेवण चरागाह

थार मरूस्थल की असाधारण प्राकृतिक चारा सम्पदा

थार मरूस्थल में लहलहाते **सेवण घास चरागाहों** का विशेष महत्व रहा है। इसकी महत्ता के कारण ही सेवण घास को मरूस्थलीय घासों का राजा कहा गया है। इस क्षेत्र में प्रकृति प्रदत्त सेवण घास चरागाहों के परिवेश में पशुपालन आधारित जीवन शैली का विकास हुआ, क्योंकि दूर–दराज के क्षेत्रों में पशुपालन ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था। जैसलमेर जिले में सेवण घास उत्पादन के संदर्भ में एक प्रचलित स्थानीय कहावत है:

"राजा रे धन रो, पाल्ली रे सेवण रो की ठा कोनी"

सेवण एक असाधारण प्राकृतिक चारा घास क्यों ?

- उच्च जल एवम् ऊर्जा उपयोग क्षमता– अल्प वर्षा में कम जल उपलब्धता के बावजूद अधिक जैवभार उत्पादन
- अन्य मरूस्थलीय घासों की अपेक्षा प्रचुर मात्रा में प्रोटीन तथा खनिजों के कारण अधिक पौष्टिक चारा घास तथा परिपक्व अवस्था में प्रफुल्लन अवस्था की अपेक्षा अधिक खाद्यता एवम् इन चरागाहों का अधिक जीवनकाल
- मानसून की एक–दो वर्षा से ही सेवण घास के जड़ स्कन्धों से अच्छी फूटान एवम् वृद्धि|

संरक्षण एंव संवर्धन

सेवण घास की पारिस्थितिकी, इसकी समृद्धता, पोषकता, पशुपालन विशेषकर थारपारकर नस्ल में योगदान एंव अन्य पहलुओं को ध्यान में रखते हुए इस असाधारण मरूस्थलीय बहुवर्षीय पौष्टिक घास के संरक्षण व संवर्धन की नितांत आवश्यकता है। इसके लिए जन सहभागिता बहुत जरूरी है। निःसंदेह अति शुष्क क्षेत्र में सेवण घास चरागाहों के संरक्षण एवम् संवर्धन से पशुपालन व्यवसाय में प्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा।

मरूस्थलीकरण नियंत्रण पर्यावरण सूचना प्रणाली केन्द्र

भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर - 342003